महात्मा गांधी का चम्पारण यात्रा

डॉ. विभा कुमारी

चम्पारण सत्याग्रह के दौरान कार्यकर्ताओं में जो परिवर्तन हुआ, उसका उल्लेख करते हुए डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है, ''गाँधी जी की यात्रा का एक परिणाम यह भी हुआ कि तृतीय श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करना हमारी दृष्टि में अपमानजनक नहीं रह गया।'' चम्पारण में गाँधी जी का कार्य मूलतः मानवतावादी था किन्तु उसके साथ ही राष्ट्रीयता के जागरण का भी अनुप्रेरक था। गाँधी जी के शब्दों में, ''चम्पारण संघर्ष इस बात का प्रमाण था कि किसी भी क्षेत्र में जनता की निःस्वार्थ सेवा देश को राजनीतिक दृष्टि से अन्ततः सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त चम्पारण सत्याग्रह ने एक महान लक्ष्य के लिए अहिंसक सत्याग्रह के उपकरण की आश्चर्यजनक क्षमता का उदाहरण प्रस्तुत किया। चम्पारण के लोगों ने जिस प्रकार शान्ति बनाये रखी वह सर्वथा उल्लेखनीय है। चम्पारण सत्याग्रह भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष के इतिहास में एक परिवर्तनीय बिन्दू भी माना जाता है। इस सत्याग्रह ने गाँधी जी को देश की जनता के नजदीक आने, उनकी समस्या समझने का भी अवसर प्रदान किया साथ ही जनता की कमजोरियों तथा शक्ति का भी पता इस सत्याग्रह से चला। सत्याग्रह का चम्पारण में सफल प्रयोग किया गया था। राष्ट्रीय संघर्ष के परवर्ती दशकों में इस अस्त्र का भारतवासियों ने कई बार व्यवहार किया और उनकी परिणति महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में हुई। इस प्रकार 1917 में गाँधी जी के नेतृत्व में जो लड़ाई चम्पारण में लड़ी गई वह हमारे आधुनिक इतिहास का धरोहर है।